हर घर एक स्कूल, हर अभिभावक एक शिक्षक

फ़ैयाज़ अहमद और शैलेन्द्र शर्मा

कोविड-19 की आपदा से बनी लॉकडाउन की परिस्थितियों से देश में स्कूल बन्दी के चलते बच्चों की पढ़ाई-लिखाई ठहर-सी गई है। घरों की चारदीवारी में सिमटे बच्चों तक शिक्षा की पहुँच बनाने के लिए सरकारें और स्वयंसेवी संस्थाएँ मिलकर कई वैकल्पिक तौर-तरीक़े आजमा रही हैं। यह आलेख दिल्ली सरकार द्वारा चलाए जा रहे मिशन बुनियाद कार्यक्रम के ज़रिए किए जा रहे ऐसे ही प्रयासों की बानगी प्रस्तुत करता है। सं.

सन्दर्भ

आजकल पूरी दुनिया एक आपदा से जूझ रही है। जब मार्च महीने में लॉकडाउन घोषित किया गया तो लोग घरों में क़ैद होकर रह गए। स्कूल-दफ़्तर सब बन्द थे, सड़कें ख़ाली थीं, सिर्फ़ स्वास्थ्य व ज़रूरी सेवाओं को इज़ाज़त थी। स्कूल बन्दी से बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर सीधा असर पड़ने की अशंका थी, इसलिए सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाओं ने अपने-अपने ढंग से बच्चों को शैक्षिक गतिविधियों से जोड़ने के लिए तुरन्त प्रयास शुरू कर दिए थे। सोशल डिस्टेंसिंग के दौर में डिजिटल माध्यम ही बच्चों तक पहुँचने का एकमात्र विकल्प नज़र आया। वॉट्सएप के ज़रिए भी बच्चों तक पहुँचने की कोशिश होने लगी। लेकिन आधे से ज़्यादा अभिभावकों के पास या तो एंड्राइड फ़ोन नहीं थे या वो इंटरनेट से नहीं जुड़े थे। दिल्ली सरकार ने इन सभी सन्दर्भों को समझते हुए 'मिशन बुनियाद कार्यक्रम' को IVR (Interactive Voice Response) की मदद से अभिभावकों के द्वारा कक्षा 3 से 8 तक के बच्चों के लिए अप्रैल के दूसरे सप्ताह में शुरू किया जो अगले 50 दिनों तक लगातार एक-एक दिन के अन्तराल पर चलता रहा। आई वी आर के द्वारा बच्चों को रिकॉर्डेड गतिविधि भेजी जाती थी। यह सुविधा किसी भी तरह के फ़ोन पर हो सकती थी। इसके लिए एक दिए गए नम्बर पर मिस्ड कॉल करना होता था और उस मिस्ड कॉल के उपरान्त गतिविधि सुनाई देती थी, बच्चा चाहे तो अनेक बार मिस्ड कॉल दे सकता था और गतिविधि सुन सकता था। लेकिन चुनौती यह थी कि कैसी गतिविधियाँ बच्चों तक भेजी जाएँ? यह तो स्पष्ट था कि इन गतिविधियों का मक़सद पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं था। लेकिन यह भी तय था कि हँसते-खेलते 'थोड़ी मस्ती और थोड़ी पढ़ाई' हो जाए। इन बातों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली सरकार के 'मिशन बुनियाद कार्यक्रम' के अन्तर्गत शिक्षकों के साथ मिलकर गतिविधियों का संग्रह तैयार किया। इस पूरी प्रक्रिया में 'प्रथम' संस्था और दिल्ली सरकार के चयनित शिक्षकों की एक टीम बनाई गई। यह टीम बच्चों की दिलचस्पी और कोरोना महामारी के संकट की घड़ी में बच्चों को कैसे गतिविधियों से जोड़े रखा जाए, इसको ध्यान में रखते हुए गतिविधियों का निर्माण करती थी। और फिर दो सदस्यीय सम्पादक मण्डल के पास इन्हें अनुमोदन के लिए भेजा जाता था। इसके बाद उसे एक ऐसी विशेषज्ञ के पास जो रंगमंच से जुड़ी और दास्तागो भी हैं, रिकॉर्डिंग के लिए भेजा जाता था। रिकॉर्डिंग के बाद पुनः इसकी गुणवत्ता

परखी जाती थी और फिर हमारी टेक्निकल टीम के पास इन्हें देखकर आगे बच्चों तक पहुँचाने के लिए उचित कार्यवाही करने हेतु भेज दिया जाता था। ये गतिविधियाँ किसी पाठ्यक्रम पर आधारित नहीं थीं बल्कि पाठ्यक्रम मुक्त थीं। लेकिन इस बात का ज़रूर ख़्याल रखा गया था कि पढ़ने-लिखने के जो बुनियादी कौशल हैं, जैसे– सुनना, बोलना, पढ़ना, समझना, और लिखना, इन्हें इन गतिविधियों में शामिल रखा जाए। साथ-ही-साथ, लेखन की अलग-अलग विधाओं जैसे कि पत्र लेखन, कविता, कहानी, निबन्ध आदि लिखने के लिए भी बच्चों को प्रेरित किया जाता था। ये गतिविधियाँ एक दिन के अन्तराल पर दिल्ली सरकार के स्कूलों में पढ़

> हमें इस बात का एहसास था कि अगर पाठ्यपुस्तक से गतिविधियाँ ली गईं या उनके पाठ्यक्रम को हल करने पर ज़ोर दिया गया, तो बच्चे अभी जिस मानसिक स्थिति में हैं वे इन गतिविधियों को नहीं करेंगे बल्कि इनसे और दूर होंगे।

रहे लगभग 5.18 लाख बच्चों के अभिभावकों को लगातार भेजी जाती थीं।

चयन के कुछ ख़ास बिन्दु

इस पूरी प्रक्रिया को देखने के दो नज़रिए हैं– एक, बच्चों का और दूसरा, अभिभावकों का। आज बच्चों का अनुभव-संसार, पहले जैसा नहीं है। सूचना सम्पन्नता बढ़ गई है। ऐसे में उनके साथ कौन-सी गतिविधियाँ की जाएँ, यह एक चुनौतीपूर्ण मामला था। बच्चों की रुचि और उनके पढ़ने व गणित करने के स्तर को ध्यान में रखे बिना किसी भी गतिविधि की संकल्पना नहीं की जा सकती। साथ ही, यह भी ध्यान रखना था कि बच्चों का दिमाग़ विवेक व तार्किकता की तरफ़ जाए ताकि उनकी कल्पनाशीलता और तर्कशक्ति बढ़े। सोचने, समझने की सलाहियत के अलावा उनमें निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित हो। वे ऐसे समाज के निर्माण का हिस्सा बनें जिसमें सबको बोलने, खाने-पीने, और रहने की आज़ादी हो। यह काम मुश्किल तो ज़रूर था, पर नामुमकिन नहीं।

हम सभी जानते हैं कि बच्चों में जानने-समझने की स्वाभाविक भूख होती है, इसलिए गम्भीर-से-गम्भीर विषय को भी हमने दिलचस्प अन्दाज़ में बच्चों के सामने रखने की कोशिश की। हमें इस बात का एहसास था कि अगर पाठ्यपुस्तक से गतिविधियाँ ली गईं या उनके पाठ्यक्रम को हल करने पर ज़ोर दिया गया, तो बच्चे अभी जिस मानसिक स्थिति में हैं वे इन गतिविधियों को नहीं करेंगे बल्कि इनसे और दूर होंगे। उनके स्कूल बन्द हैं, उनका आना जाना, बाहर निकलना, खेलना कूदना, दोस्तों के साथ घूमना, सब बन्द है। ऐसी स्थिति में यदि गम्भीर विषयों को गतिविधियों के माध्यम से समझने के लिए दिया गया, तो बच्चे उन्हें स्वीकार नहीं करेंगे। हमने जिन गतिविधियों का चयन किया, उनके कुछ उदाहरण और विवरण आगे दिए गए हैं :

गतिविधि एक : कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिए

"नमस्कार, आजकल कुछ अजीब-सी स्थिति है। सभी लोग अपने-अपने घरों में बन्द हैं। स्कूल बन्द हैं, सारी दुकानें बन्द हैं। कोई कहीं आ जा नहीं रहा है। बसें भी नहीं चल रही हैं और मेट्रो ट्रेन भी नहीं। ऐसी स्थिति में अगर एक बस अपनी सहेली मेट्रो ट्रेन का हाल-चाल पूछना चाहे तो वह पत्र में क्या-क्या लिखेगी? बच्चे को बोलिए कि वह बस की तरफ़ से एक पत्र मेट्रो ट्रेन को लिखे और घर के सभी सदस्यों को पढ़कर सुनाए।"

इस गतिविधि को अगर देखें तो थोड़ी रोचक लगती है। साथ ही, इसमें यह कोशिश भी की गई है कि लिखने की जो अलग-अलग विधाएँ हैं उनसे बच्चे का वास्ता न टूटे। पत्र लिखना उनसे परीक्षा में पूछा जाता है। अगर उन्हें कहा जाता कि अपने दादा-दादी को पत्र लिखो और उन्हें लॉकडाउन की स्थिति के बारे में, दिल्ली के बारे में बताओ, तो शायद वे नहीं करते। गतिविधि वही है, लेकिन पूछने का अन्दाज़ अलग है। हमने लेखन विधा का ही इस्तेमाल किया लेकिन उसका पात्र बस और मेट्रो ट्रेन को बनाया। अगर बच्चा बस और मेट्रो ट्रेन के बीच पत्र का आदान-प्रदान कर सकता है या ऐसे विषय पर लिख सकता है, तो वह किसी भी तरह के पत्र लिख सकता है ऐसा मेरा मानना है। और मुझे लगता है कि बहुतेरे इस बात से सहमत भी होंगे। किसी गम्भीर-से-गम्भीर विषय को भी अगर कहानी के रूप में पेश किया जाए तो उससे रोचकता बढ़ जाती है और पढ़ने-लिखने के लिए कोई भी प्रेरित हो जाता है।

गतिविधि दो : कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों के लिए

कहानी के माध्यम से समझाना रोचक तो होता ही है, आसान भी हो जाता है। बच्चों के लिए कहानी लिखना एक विशिष्ट प्रतिभा की माँग करता है। इस क़िस्म के रचना-कर्म में अनुभव, कल्पना-शक्ति, भाषा-ज्ञान, साहित्य-ज्ञान, तकनीक, समाज-बोध सबकी ज़रूरत पड़ती है। इसको ध्यान में रखते हुए हमने ऐसी गतिविधियों को शामिल किया जिनसे बच्चों की कल्पनाशक्ति बढ़े, जैसे :

"एक रात अंजू ने सपना देखा कि आम के पेड़ पर अंगूर उगे हुए हैं और सेब के पेड़ पर सन्तरे। नारियल के पेड़ पर नाशपातियाँ लगी हुई हैं। और तो और अंगूर की बेल में बड़े-बड़े नारियल लटके हुए हैं। सारे पशु-पक्षी बड़े-बड़े घरों में रह रहे हैं, जबकि लोग...। अंजू अभी तक इतना ही सपना देख पाई थी कि माँ ने उसे नींद से जगा दिया। अब बच्चे से पूछिए कि अगर अंजू नींद से नहीं जागती तो वह सपने में और क्या-क्या देखती? ये मज़ेदार सपना बच्चा पहले सोचे, फिर लिखे और घर के सभी सदस्यों को पढ़कर सुनाए।"

बच्चों और अभिभावकों के फ़ीडबैक से साफ़ पता चलता है कि काफ़ी रोचक कहानियाँ लिखीं गईं। ये तो बात रही कि हमने बच्चों से जुड़ने का कौन-सा माध्यम या कौन-सी विधा को चुना।

एक और महत्त्वपूर्ण बात हुई, वह यह कि अभिभावकों को हमेशा लगता था कि वे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के साथ किस प्रकार जुड़ें, उनके पास समय नहीं है, और पाठ्यक्रम की जानकारी भी नहीं है। साथ ही बहुत सारे अभिभावक तो ख़ुद ही कभी स्कूल नहीं गए और बहुत सारे बच्चे तो ऐसे भी हैं जो फ़र्स्ट जनरेशन लर्नर हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों को स्कूल के सिवाय घर में किसी तरह का सहयोग नहीं मिल पाता था और वे समझते थे कि पढ़ाई-लिखाई सिर्फ़ स्कूलों में ही हो सकती है, घरों में नहीं। हमने अपनी गतिविधियों के माध्यम से अभिभावकों को जोड़ने की कोशिश की। वे अकसर कहते हैं कि उनके पास तो बहुत सारे काम होते हैं, ऐसे में बच्चों की मदद करना, उनके साथ गतिविधि करना किसी बोझ से कम नहीं है।

कहानी के माध्यम से समझाना रोचक तो होता ही है, आसान भी हो जाता है। बच्चों के लिए कहानी लिखना एक विशिष्ट प्रतिभा की माँग करता है। इस क़िस्म के रचना-कर्म में अनुभव, कल्पना-शक्ति, भाषा-ज्ञान, साहित्य-ज्ञान, तकनीक, समाज-बोध सबकी ज़रूरत पड़ती है।

उनकी इस शिकायत को हमने ध्यान में रखा था। साथ ही, हमें इस बात का भी ध्यान रखना था कि घर के बड़े-बुज़ुर्गों को भी एक तरह के रिलेक्सेशन की ज़रूरत है। वे भी घरों में क़ैद होकर अजीब-सी मानसिक स्थिति से गुज़र रहे हैं, इसलिए अगर उनको भी बच्चों के साथ जोड़ दिया जाए तो एक छोटी-सी गतिविधि से बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावकों और उनके घर के दूसरे सदस्यों

> जब हम बच्चों को अपने बुज़ुर्गों से यह पूछने को कहते हैं कि वे अपने बचपन में कौन-से खेल खेलते थे, किन बातों पर अपने भाई-बहनों से नोक झोंक करते थे तो इससे पीढ़ियों के बीच संवाद चालू होते हैं। बड़ों को भी एक लम्हे के लिए अपने बचपन में झाँकने का मौक़ा मिलता है।

को भी इससे जुड़ने या कुछ अलग करने का मौक़ा मिल जाएगा। अब आपके सामने एक और उदाहरण रखता हूँ :

गतिविधि तीन : कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों के लिए

"आज की गतिविधि के बारे में बात करते हैं। घर में बैठे-बैठे अन्दाज़ा लगाने का खेल खेलते हैं। अपने बच्चों से पूछिए कि घर में अलग-अलग कार्यों में, जैसे– नहाने में, कपड़े और बर्तन धोने में, आज लगभग कितना पानी इस्तेमाल हुआ? मान लीजिए कि एक बाल्टी में 15 लीटर पानी आता है, तो बच्चों से पूछिए कि नहाने, कपड़े और बर्तन धोने में अलग-अलग कितने लीटर पानी ख़र्च हुआ होगा? बच्चों से एक तालिका बनाकर हिसाब लगाने के लिए कहिए।"

इस गतिविधि का फ़ायदा यह हुआ कि बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावक भी कहने लगे कि हम तो बहुत पानी बर्बाद करते हैं। हमें तो इसका अन्दाज़ा ही नहीं था कि दिनभर में हम 500 लीटर या हज़ार लीटर पानी कैसे ख़र्च कर देते हैं! आगे से हमें यह कोशिश करनी होगी कि पानी की कम-से-कम बर्बादी हो।

आजकल एक घर में रहते हुए भी अकसर एक दूसरे से संवाद नहीं हो पाता। इस बार हमें बड़ों और बच्चों के बीच संवाद स्थापित करने का मौक़ा मिला। जब हम बच्चों को अपने बुज़ुर्गों से यह पूछने को कहते हैं कि वे अपने बचपन में कौन-से खेल खेलते थे, किन बातों पर अपने भाई-बहनों से नोक झोंक करते थे तो इससे पीढ़ियों के बीच संवाद चालू होते हैं। बड़ों को भी एक लम्हे के लिए अपने बचपन में झाँकने का मौक़ा मिलता है। अपने बचपन को वर्तमान से जोड़ते हुए उन्हें एहसास होता है कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है। पहले कुछ सीखा था अपने ज़माने से, अपने बुज़ुर्गों से, लेकिन आज अपने बच्चों से और आज के हालात से सीख रहे हैं। शायद इसी को 'लाइफ़ लॉन्ग लर्निंग' भी कह सकते हैं।

गतिविधि चार : कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों के लिए

"आशी और अकुल बहन-भाई हैं और अच्छे दोस्त भी। अकसर किसी-न-किसी बात को लेकर दोनों में नोक झोंक चलती रहती है। आशी अगर कुर्सी पर बैठती है तो अकुल भी उसी कुर्सी पर बैठना चाहता है। अकुल कुछ भी खाता है तो आशी भी ज़िद करके वही चीज़ खाना चाहती है। लेकिन फिर भी वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। बच्चों से कहिए कि वो दादा-दादी या नाना-नानी, चाचा-चाची आदि से पूछकर पता करें कि जब वे छोटे थे तब अपने भाई-बहन के साथ कैसी नोक झोंक किया करते थे?"

इस तरह की लगभग 25-25 गतिविधियाँ कक्षा 3 से 5 और कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों

के लिए भेजी गईं, और यह सिलसिला लगभग डेढ़ महीने तक चला, जिसमें बच्चों के लिए हर दूसरे दिन गतिविधियाँ भेजी जाती थीं। बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों के फ़ीडबैक से यह तो स्पष्ट हो गया कि ये सारी गतिविधियाँ सिर्फ़ बच्चों को सतही तौर पर गतिविधियों में शामिल करने के लिए नहीं थीं, बल्कि उनके सीखने में भी ये गतिविधियाँ मदद कर रही थीं। फ़ीडबैक कई तरीक़ों से लिए गए हैं:

- असर (ASER) सेंटर ने एक सर्वे कंडक्ट किया था जिसमें 677 अभिभावकों से कुछ सवाल पूछे गए थे। उनमें से 63% अभिभावकों ने कहा कि जब से ये गतिविधियाँ शुरू हुईं, तभी से वे इससे जुड़े हुए हैं। 80% अभिभावकों का कहना था कि वे लगातार अपने बच्चों के साथ गतिविधियों में शामिल रहे हैं और उनके साथ मिलकर उन्होंने गतिविधियाँ की हैं। इस सर्वे से यह भी पता चला कि कक्षा 6 से 8 की तुलना में कक्षा 3 से 5 तक के बच्चे ज़्यादा उत्सुक दिखाई दिए और उन्होंने अपने-अपने अभिभावकों के साथ मिलकर गतिविधियाँ पूरी कीं। अभिभावकों से भी छोटे बच्चों को ज़्यादा सहयोग मिला। बच्चों ने ऐसी गतिविधियों में ज़्यादा मज़ा लिया जिनमें उनके परिवार और उनके घर वालों को शामिल किया गया था।

- दूसरा सर्वे– 'चिल्ड्रेन वेल-बीइंग एंड लर्निंग सर्वे'– दिल्ली सरकार के Delhi Commission for Protection of Child Rights (DCPCR) की तरफ़ से किया गया था। इस सर्वे का मुख्य बिन्दु है :

- ये गतिविधियाँ विशेषतौर पर दिल्ली सरकार के अन्तर्गत आने वाले सरकारी स्कूलों के लिए थीं, लेकिन दिल्ली नगर निगम (MCD) के स्कूलों के कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों से भी जब इन गतिविधियों के बारे में पूछा गया तो लगभग 26% बच्चे गतिविधियों के बारे में अच्छे-से बता पा रहे थे कि कौन-कौन सी गतिविधियाँ थीं और क्या करना था।

- कुछ मेंटर टीचर बच्चों से लगातार सम्पर्क स्थापित किए हुए थे और उनसे कुछ दिनों के अन्तराल पर लगातार फ़ीडबैक लेते थे। इससे गतिविधियों में सुधार करने में आसानी होती थी।

- IVR तैयार करने वाली कोर टीम के सदस्य अलग-अलग शिक्षकों से बातचीत करके समय-समय पर फ़ीडबैक लेते थे और गतिविधियों में ज़रूरी बदलाव करते थे।

- इसके अलावा दिल्ली के उप मुख्यमंत्री भी हर सप्ताह अभिभावकों और बच्चों से सीधे बात करके फ़ीडबैक लेते थे और इन गतिविधियों में कैसे और सुधार किया जा सकता है, इस बाबत उनसे सुझाव भी माँगते थे।

फ़ैयाज़ अहमद ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। इनकी साहित्य में रुचि है। पत्रिकाओं में कहानियाँ व लेख लिखते रहते हैं। तेरह वर्षों से ग़ैर-सरकारी संस्था 'प्रथम एजुकेशन फ़ाउण्डेशन' में कार्य कर रहे हैं।
सम्पर्क : faiyaz@pratham.org

शैलेन्द्र शर्मा दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशक के प्रधान सलाहकार हैं। दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर करने में इनकी भागीदारी रही है। आप मुम्बई के टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंस के छात्र रहे हैं। वर्ष 2002 से 'प्रथम' संस्था में वरिष्ठ नेतृत्व दल के सदस्य हैं।
सम्पर्क : shailendra@pratham.org